E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Impact Factor: 5.924

स्वामीप्रियतमानन्दसरस्वतीसहस्रनामस्तोत्र में सार्वकालिक विकासदृष्टि

[1]नन्दराम शर्मा, [2]डॉ. कमलेश माथुर

[1]पी-एच.डी. संस्कृत शोधार्थी, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर

[2]मार्गदर्शक,संस्कृत विभागाध्यक्ष, शासकीय पी. जी. कॉलेज, दतिया

DOI: https://doi.org/zenodo.13763634

स्वामीप्रियतमानन्दसरस्वतीसहस्रनामस्तोत्र में सार्वकालिक विकास दृष्टि-

मानव की सनातन साधना और शुभचेतना को सहस्रधानामों से परिभाषित करने वाला यह स्तोत्र मानव मन का मंगल तीर्थ है। इसके पारायण से जिसको जो उचित वस्तु चाहिये, वह प्राप्त हो सकती है। जैसे भास्कर के बिम्ब में अनेक सहस्र रश्मियां होती हैं, उसके प्रकाश से अनन्त के दर्शन होते हैं, उसी प्रकार स्वामीप्रियतमानंद सरस्वती जी के सहस्रनाम के स्तोत्र का समुच्चय अखण्ड आनन्द की अजस धारा को प्रवाहित करने वाली पुण्यसलिला भागीरथी है। दिव्य पुरूषों का कोई एक नाम नहीं होता और न कोई एक रूप होता हैं जीवन की क्रियाशीलता में सभी नाम उनके हैं और सभी रूपों में उनका समन्वय है। नाम और रूप जीवात्मा और परमात्मा के अमृत प्रतीक हैं। नाम और रूप एक ही तत्व के दो सोपान हैं। अनन्त नाम और अनन्त रूप का पर्याय ही इस सहस्रनाम की चरितार्थता है। इस महनीय कृति को मनोयोग पूर्वक पाठकरने से शान्ति और सन्तोष रूपी मूल्यवान रत्न प्राप्त होते हैं। जीवन में अपूर्व आनन्द की अनुभूति होती है। आचार्य रामकिशोर शर्मा इस सहस्रनाम स्तोत्र को अपनी पैतृक सम्पत्ति मानते हैं। जिसे उन्होंने भक्तियोग के लोकन्यास द्वारा सार्वजनिक कर दिया। इसके पारायण एवं मनन से व्यक्ति कर्मयोगी बन सकता है और निःस्वार्थ जीवन जीने का सौभाग्य प्राप्त कर सकता हैं। यह विश्वात्मा का धारावाहिक स्वरूप है। इस सहस्रनाम में एक अद्भुत जीवन संगीत सुनाई देता है। यह जीवन का सुलभ संविधान है इसमें नाम और नामी की अमोघ शक्ति उद्भावित है। पूर्वजन्म के संस्कार और इस जन्म की कर्तव्य परायणता से इस कालजयी कृति की संरचना हुयी। यह परमपिता परमात्मा का अक्षय आशीर्वाद है। जिसकी संकल्प शक्ति से कवि को ज्ञान सम्पन्न बनाया। इसमें कवि की ऋतम्भरा प्रज्ञा परिलक्षित होती है। यह पूर्वजों के प्रबल प्रताप के प्रकाश से ज्योतित है। इसमें वेद, पुराण, शास्त्र, आर्षकाव्य आदि का भी आलंबन है। सहस्रनाम में द्योतित शब्दशक्ति वीणापाणि सरस्वती की ही उपस्थिति है। परमात्मा की ओंकार ध्वनि का निरन्तर गुंजायमान नाद की प्रतीति भी रसोत्कर्ष की निष्पत्ति कराती है। नामों में सन्निहित अर्थ ध्वनियां शक्ति का अनुभव कराती हैं। उसे पहचानने की आवश्यकता है। इसके मानसिक जाप से आध्यात्मिक चेतना जाग्रत होती है। इसमें सार्वकालिक

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Impact Factor: 5.924

विकासदृष्टि का आभास उन्मेषकारक है। यह सहस्रनाम स्तोत्र विद्वतापूर्ण तो है ही, साथ में विरग्धतापूर्ण भी है। यह भक्त हृदय की सात्विक स्फुरित पराकाष्ठा है। श्रद्धा और विश्वास का अद्वैत संगम है। भावुक मन का रसार्द्र रूप है। भाषा और शैली की सम्पन्नता से यह 'साधुवाद का उल्लेखनीय आभूषण है।

लोकेश्वरः शिवशर्मा निष्कामभवः साधनः। अभयदाता पुण्यात्मा समदर्शी भयंकरः ॥

अनुकूलः प्रतिकूलः अन्तःसाक्षी महामना। पराक्रमी शूरवरः अन्तर्यामी धुरन्धरः ॥

महाबलः सर्वपूज्यः गम्भीरः यज्ञभावनः। भक्ताधीनः सर्वश्रेयः निःशंकः शुभलक्षणः ॥ 1

बौद्धिक संतुलन - भक्ति के भाव और बुद्धि का संतुलन होना चाहिये। जो केवल भाव से भक्ति करता है, तो उसका वह स्वभाव बन जाता है। कोल्हू के बैल की तरह पूरे जीवन चक्कर लगाता रहता है। गोलाकार चलने से ही उसका जीवन शून्य रहता है। भगवान कहते हैं कि ''ददामि योगबुद्धि ते'' में बुद्धि का योग भक्तिमार्गी को देता हूँ। लेकिन वे बुद्धि का उपयोग न करके अन्धविश्वास को ही सर्वस्व मान लेते हैं। भागना भक्ति नहीं है अगरबत्ती और धूप को अग्नि के सुपुर्द कर देना भी भक्ति नहीं है। कृत्रिम पूजन सामग्री से पर्यावरण प्रदूषित हो रहा है। साधक अन्ध विश्वास से इतना भयभीत है कि उसे अनिष्ट की आशंका लगी रहती है। अविश्वास के सामने सत्य नहीं बोलना चाहिये। ऐसा नीति कहती है। सत्य बोलने पर अनर्थ हो जायेगा। नीति का आलंबन ही धर्म का निष्कर्ष है। हित ही सर्वोपरि धर्म है। भगवान की तटस्थ शक्ति जीव है। पराशक्ति और मायाशक्ति भगवान की प्राप्ति दासत्व से ही संभव है। स्वामीप्रियतमानंदसरस्वतीसहस्रनामस्तोत्र' के अनुसार पराक्रम की प्रतिमूर्ति चेतना है। पराक्रम की प्रस्तुति के कारण शक्ति ही वीरता की वर्णमाला बन जाती है। शक्ति दुर्ग के दिव्य हस्ताक्षर हैं। रम्भ और अत्याचार को परास्त करने के लिये शक्ति साकार हो जाती है।

इस सहस्रनाम स्तोत्र की समीक्षा में कपितय नाम इस आशय को व्यक्त करते हैं कि संन्यास शमशान का सन्नाटा नहीं है वह तो गतिशीलता है। वह ज्योतिर्मय दीपावली है। सरितायें रुक जायेंगी तो दूषित हो जायेंगी। विकृत भावों की दुर्गन्ध आने लगेगी। संन्यास शून्यता तोड़ने वाली वृत्ति है। जीवन का दिव्यरस है। जीवन का माधुर्य है। मन का सामगान है। बुद्धि की उज्ज्वल तरंग है। भौतिक पदार्थ नीरसता देते हैं। ब्रह्मरस अद्वितीय है। मन्दिर कथा, आख्यान, उपाख्यान हमें ज्ञान देते हैं। सुख शान्ति देते हैं। भाग्य का दरवाजा अपनी त्रुटियों को खोजने से मिलता है। संन्यास सुधार लाने वाला आश्रम है। आश्रम नितान्त रुकने का आश्रय नहीं है। समाज को ठिकाने पर लाने का महत्वपूर्ण प्रयास है।

निद्रालस्य रहितः च रामनामपरायणः। जयोत्सवः निर्विकल्पः नित्यतृप्तः निरंजनः ॥

गुरुप्रियः गम्भीरः नित्यपूज्यः निस्संशयः। गीमागेयः वेदघोषः सन्तुष्टः यतिभूषणः ॥

श्यामो युवा लोहिताक्षो सिंहस्कन्धो महाभुजः। सत्ववान् गुणसम्पन्नो दीप्तास्यो मितभाषितः ॥

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Impact Factor: 5.924

आजानुबाहुः सुमुखः दीप्यमानः स्वतेजसा। ऋक्सामयजुषां घोषो ज्याघोषश्च महात्मनः ॥ 2

भक्तिपरक धारणा- स्वामीप्रियतमानंदसरस्वतीसहस्रनामस्तोत्र निर्देशित करता है जो परधन का शोषण कर नश्वर पदार्थों में लगाते हैं। दूसरों की जीविका को नश्वर बनाते हैं। वे पीढ़ी पर पीढ़ी नश्वरता को प्राप्त करते हैं। निर्धन के धन राम हैं। हृदयहीन लोग इसको क्या समझें? केवट ने जिस नाव में राम सीता को पार करने के लिये विठाया इसमें फिर किसी को नहीं विठाया। वह नाव तो उसके लिये सदैव के लिये आराध्या बन गयी, क्योंकि उसमें उसके आराधक विद्यमान हुए। ऐसी भक्तिपरक धारणा का प्रशस्त रूप वंदनीय है। जहाँ संवाद है वहीं सद्भाव है। जहाँ संवाद नहीं सम्बन्ध, रिश्ते शुष्क हो जाते हैं। सम्बन्ध और सम्पर्क औपचारिकता है। चित्रवृत्ति निर्मल होगी तो इष्ट के दर्शन किसी भी भक्ति साधन में हो सकते हैं। यदि मलिन हुयी तो साक्षात् इष्ट में भी इष्ट परिलक्षित नहीं होगा। यथा-

लोकप्रकाशकः श्रीमौत्लोकचक्षुर्यतीश्वरः। लोकसाक्षी नमस्तुभ्यं सर्वसाधुनमस्कृतः।

परं सूक्ष्मं नमस्तुभ्यं भक्ताधारं च शाश्वतम्। जगतामुपकाराय त्वामहं च नमाम्यहम्॥

वरं वरेण्यं वरदं ब्रह्मज्योतिः सनातनम्। सिद्धं सिद्धिस्वरूपं च ज्ञानराशिस्वरूपिणम्॥

अव्यक्तमक्षरं नित्यं भक्तानुग्रहकारकम्। सर्वपूज्यं गुणार्णवं सिद्धिदं सिद्धिसाधनम्॥

प्राणरूपं प्राणिनां च शुद्धकाषायवाससम्। शिवस्वरूपं शिवदं शिष्याधारं परात्परम्॥ 3

संदर्भ-संकेत-

1.स्वामीप्रियतमानन्दसरस्वतीसहस्रनामस्तोत्र - श्लोक 42-44.

2. स्वामीप्रियतमानन्दसरस्वतीसहस्रनामस्तोत्र - श्लोक 12-14.

3. स्वामीप्रियतमानन्दसरस्वतीसहस्रनामस्तोत्र - श्लोक 15-19.